॥ श्री गणेशाय नमः॥

बुध (सौम्य)

बुध का स्वरूप :- भगवान् बुध पीले रंग की पुष्पमाला तथा पीला वस्त्र धारण करते हैं, उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है, अपने चार हाथों में तलवार, ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किए रहते हैं, सिर पर स्वर्णमुकुट है, वाहन सिंह है, बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है, इस रथ में श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि नामक घोड़े जुते रहते हैं।
बुध के पिता का नाम चन्द्रमा और माता का नाम तारा है। इनका विवाह राज मनु की कन्या इला के साथ हुआ। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई।

प्रातःबली, वैश्य जाति, शिल्प विद्या, द्विपद, सौम्यस्वभाव, ग्रामवासी, शीर्षोदयी, सम प्रकृति (वात-पित्त-कफ), उत्तर मुख, बाल्यावस्था, रजोगुणी, ज्योतिर्विद्,

बुध ग्रह :- मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है। कन्या के १५ अंश पर उच्च तथा मीन के १५ अंश पर नीच का होता है। कन्या के १५ से २० अंशो तक मूलत्रिकोण मे होता है। बुध की महादशा १७ वर्ष की होती है। ३२ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

बुध ग्रह :- गोचर में जब जन्म राशि से २, ४, ६, ८, १० और ११ स्थान में बुध शुभ तथा १, ३, ५, ७, ९ और १२ वे स्थान में अशुभफलप्रद होता है।

बुधवार व्रत विधि :- प्रातःकाल ब्रह्ममुहुर्त (सूर्योदय से २ घण्टा पहाले या ४-५ प्रातः) में उठकर नित्य-कर्म आरम्भ करना चाहिए तथा संध्या वन्दनादि के बाद बुधकवच का पाठ करे, बुध मन्त्र का यथाशक्ति जप करे, सूर्यार्घ्य दे तथा यथाशक्ति दानकर मध्याह्नोत्तरकाल में एक बार भोजन करे। भोजन में नमक रहित कोई एक अन्न लेना चाहिए पूआ, पूरी आदि। गुरुवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद पारण करे।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए कन्यादान करना चाहिए।

दान पदार्थ :- कांस्यपात्र, हरितवस्त्र, हाथीदाँत, घृत, मूंग, पन्ना, सुवर्ण, दासी, सर्व-पुष्प, रत्न, कर्पूर, पुस्तक, विविध-फल, षट्रसभोजन, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- पन्ना।

धारणार्थ औषधि :- विधारा, वृद्धमूल।

देवता :- बुध ग्रह के अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवता भगवान् विष्णु हैं।

ध्यान :- दूर्वादलस्याम वपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारो।
वर्माग्रिधृक्सोमसुतो सदा मे सिंहाधिरूढोवरदो बुधो मे॥
(पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥)

२४ बुध यन्त्रम्

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ बुं बुधाय नमः। जपसंख्या ९,००० (४,०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ ब्राँ ब्रीँ बौँ सः बुधायनमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ऐँ श्रीँ श्रीँ बुधाय नमः।

बुध गायत्री :- ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यं प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मंत्र :- प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- ॐ उद्बुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषि बृहतीछन्दः बुधोदेवता त्वामिष्टापूर्तेसमिति बीजम् बुधप्रीतये जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ परमेष्ठीऋषये नमः शिरसि।
ॐ बृहतीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ बुधदेवतायै नमः हृदये।
ॐ त्वमिष्टापूर्तेसमिति बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ बुधप्रीतये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास [३]:- ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहि अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ त्वमिष्टापूर्तेसꣳ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ सृजयेथामयं च मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ अस्मिन्त्सधस्थेऽअदयुत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विश्वेदेवा कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ यजमानश्चसीदत करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहि हृदयाय नमः।
ॐ त्वमिष्टापूर्तेसꣳ शिरसे स्वाहा।
ॐ सूजेथामयं च शिखायै वषट्।
ॐ अस्मिन्त्सधस्थेऽअदयुत्तरस्मिन् कवचाय हुम्।
ॐ विश्वदेवा नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ यजमानश्चसीदत अस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथा मयं च।
अस्मिन् त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥
॥ ॐ बुधाय नमः॥

बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग-अस्य श्रीबुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रस्य प्रजापतिऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधोदेवता, बुधप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः। प्रियंगु कलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥ १॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः। विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः॥ २॥
चंद्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः। ग्रहपीडा हरो दार-पुत्र-धान्य-पशुप्रदः॥ ३॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः। पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥ ४॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति। तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतं॥ ५॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे बुधपंचविंशतिनामस्तोत्रम् समाप्तम्॥

बुधकवचम्

विनियोग-अस्य श्रीबुधकवचस्तोत्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बुधोदेवता, बुधप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः। पीतांबरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः॥ १॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा। नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोत्रे पातु निशाप्रियः॥ २॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम। कंठं पातु विधोः पुत्रो भुजौ पुस्तकभूषणः॥ ३॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं रोहिणी सुतः। नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥ ४॥
जानुनी रौहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः। पादौमेबोधनः पातु पातु सौम्यौऽखिलं वपुः॥ ५॥
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम्। सर्वरोगप्रशमनम् सर्वदुःखनिवारणम्॥ ६॥
आयुरारोग्यधनदम् पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्। यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥ ७॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे बुधकवचं सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**-- विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

४ **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com